शिक्षा संवाद
2021, 8(1-2): 71-72
ISSN: 2348-5558
©2021, संपादक, शिक्षा संवाद, नई दिल्ली

कविता

कोविड़ का साया

शिखा
सामाजिक कायकर्ता, संवाद शिक्षा समिति

एक साया सा छाया है, चारों ओर गहरा डर,
सपनों की राहों में, बिखर गया है बर्फ़ का मंजर।
दूर कहीं, घरों में बंद हैं सब लोग,
जीवन की चुप्प, खामोश हो गई तन्हा गलियों में ।

सपनों का सिलसिला टूटने लगा है,
आशाओं के दीप बुझने लगे हैं।
सन्नाटों ने घेर ली है एक नई तरह की रात,
मन में सवालों का चलता है तूफ़ान।

कभी मास्क में, कभी डर में, हम जी रहे थे,
लेकिन उम्मीदों की लौ कभी नहीं बुझी थी।
हिम्मत से सामना किया इस महामारी से,
कभी हंसते थे, कभी रुलाते थे ये अंधेरे।

आशा का सूरज फिर से उग आया,
मन में विश्वास, दिल में जलती नयी चाहत।

हम फिर से जीएंगे, हंसी में हंसेंगे,
कोविड से युद्ध हमारा अब खत्म होगा।

अंधेरे में भी उम्मीद की किरण है,
हम सभी मिलकर इसे दूर करेंगे।
कोविड की छाया से हम बाहर निकलेंगे,
समाज की शक्ति से हम इस बुराई को हराएंगे।

*****